जैविक खेती के दो अमृत "जीवामृत एवं बीजामृत"

पिछले 10–15 वर्षों से विश्व भर में खेती, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों से जुडी एक नई बहस चल रही है। बहस यह है वर्तमान तकनीकों से खेती, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर पडने वाले प्रभावों व दुष्प्रभावों की। हरितक्रान्ति के नाम पर जो तकनीक लायी गयी वो खेती करने वाले और उसके खेत दोनों का ही विनाश कर रही हैं उनसे खेती और खेतीहर दोनों ही बर्वाद हो रहे है। खेत की मिट्टी तक जबाब दे गयी है और किसान की खेती करने की इच्छा शक्ति भी खत्म सी होती जा रही है। मिट्टी को कृषि रासायन, मशीनीकरण और विवेकहीन दोहन दिनप्रति दिन मार रहा है।

काफी प्रयास के बाद कृषि विशेषज्ञों ने देशी गाय के गोबर और गौ–मूत्र से जीवामृत एवं बीजामृत जुडवॉ भाईयों के रूप में ऐसी विधियां विकसित की जिनका प्रयोग करके आज हजारों किसान कृषि रसायनों के जाल से बाहर आ गये हैं। कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को ऐसा विचार दिया है जो उसकी मिट्टी को उपजाऊ बनाता है और पानी को भी बचाता है तथा अन्य प्राणियों के प्रति एक प्रेमभाव भी जगाता है और किसान को एक सचेतन विज्ञानी किसान बनाता है। वह किसान को धरती मां और समाज के प्रति उसके कर्तव्यों को निभाने की सीख, समझ और संस्कार देता है।

बीजामृत

बिजाई व रोपाई के बाद बीज तथा पौधे की जड़ भूमि के सम्पर्क में आने के बाद कई हानिकारक कवक तथा सूक्ष्म जीवाणुंओं के सम्पर्क में आते है। अतः बीजाई तथा रोपण पूर्व इनका शोधन बीजामृत से अवश्य किया जाना चाहिए। बीजामृत आसानी से अपनाया जा सकता है। इसके बनाने तथा उपयोग का संक्षिप्त् विवेचन निम्नवत है :

साम्रगी :

1. देशी गाय का गोबर	50 ग्रा.
2. गौ–मूत्र	10 मि.लीटर
3. चूना	5 ग्राम
4. उर्वरक मिट्टी (जहाँ रासायन का उपयोग न किया गया हो)	20 ग्राम
5. गुड़	30 ग्राम
6. पानी	1 लीटर

7. पात्र – मिट्टी/सीमेंण्ट/प्लास्टिक

बीजामृत बनाने की विधि :

- ☞ गाय के गोबर को कपड़े की पोटली बनाकर सायंकाल पात्र में पानी भर कर डुबो दिया जाये।
- ☞ 5 ग्राम चूने को 100 मि.लीटर पानी में मिलायें।
- ☞ अगले दिन पोटली में गोबर को पानी से इस प्रकार निचोड़ा जाय की गोबर का सत पानी में आ जाये।
- ☞ इसमें उर्वरक मिट्टी, गौ–मूत्र, तथा चूना पानी मिलाकर 1 लीटर बना लिया जायें।
- ☞ किसी लकड़ी से इसे अच्छी प्रकार फेंटाई कर अगले दिन उपयोग किया जाय।
- ☞ उपरोक्त सामग्री को आपस में मिलाकर 24 घण्टा रखने के बाद उपयोग हेतु बीजामृत तैयार हो जाता है। इस बीच 2–3 बार किसी लकड़ी के सहारे अच्छी प्रकार घुमाकर उपयोग किया जाये।

उपयोग :

- ☞ बुवाई करने से पूर्व बीज पर बीजामृत छिड़ककर, छाँव में सुखाकर बिजाई की जाये।
- ☞ आलू, शकरकन्दी, परवल, सूरन आदि के रोपण किये जाने वाले भाग को बीजामृत से उपचारित कर रोपण किया जाये।
- ☞ जिन सब्जियों में पौध (सीडलिंग) रोपण की जानी है, इनको भी बीजामृत से उपचारित कर रोपित करें।

जीवामृत

जीवामृत का नियमित उपयोग जैविक खेती के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

सामग्री :

1. गाय का गोबर	50 ग्राम
2. गौ–मूत्र	10 मि.लीटर
3. गुड़	20 ग्राम
4. जैविक घोल	50 ग्राम
5. बेसन (किसी दाल का)	20 ग्राम
6. ऊर्वरक मिट्टी (जहाँ रासायन का उपयोग न किया गया हो)	50 ग्राम
7. पानी	2 लीटर

8. पात्र–मिट्टी/सीमेंण्ट/प्लास्टिक

जीवामृत बनाने की विधि :

उपरोक्त साम्रगी को 5 लीटर वाले प्लास्टिक ड्रम में मिलाये और दिन में दो बार प्रातः एवं सायंकाल लकडी/डण्डे के सहारे घड़ी कि दिशा में भँवर बनाते हुये चलाया जाय। पात्र को जाली/टाट अथवा

कपड़े/जाली से ढका रखा जाय। लगभग 3 से 7 दिन में जीवामृत तैयार हो जायेगा।

उपयोग :

- ☞ सिंचाई के पानी के साथ मिलाकर।
- ☞ अच्छी प्रकार छनायी कर टपक/बाछौरी (ड्रिप/स्प्रिन्कलर) द्वारा।
- ☞ जैविक खेती में प्रारम्भ में माह में 2 बार तथा बाद में एक बार उपयोग किया जाना चाहिए।
- ☞ दूरी पर रोपाई/बीजाई की गयी सब्जियों जैसे– टमाटर, बैंगन, परवल, लौकी, कद्दू आदि के चारो तरफ।

तरल खाद

तरल खाद, गोबर, गौ–मूत्र तथा विभिन्न प्रकार के औषधीय एवं पौष्टिक पौधों एवं वृक्षों की पत्तियों द्वारा बनाये जाते है जैसे– नीम, अरण्डी, करंज, मदार (आक), सदाबहार (बेशरम बेल या आइपोमिया), लैण्टाना, धतूरा, कंटीली, कनेर, आदि। इस तरल खाद में कीट एवं रोग निवारक गुण होते है।

सामग्री :

1.	प्लास्टिक ड्रम	5 लीटर
2.	नीम, अरण्डी, आईपोमिया, लैण्टाना, धतूरा, आक, कनेर की पत्तियां	2 कि. ग्राम
3.	गाय का गोबर	50 ग्राम
4.	गौ–मूत्र	50 मि.लीटर
5.	छाछ	20 मि.लीटर
6.	बेसन	20 ग्राम
7.	गुड़	20 ग्राम
8.	लहसुन	10 ग्राम
9.	जैविक घोल	100 ग्राम
10.	उपजाऊ मिट्टी (बरगद, पीपल पेड के नीचे से)	50 ग्राम

बनाने की विधि एवं उपयोग :

- सामग्री अनुसार पेड़ पौधों में से किसी एक या दो के फूल पत्तियों की बारीक कुट्टी कर लें।
- सभी सामग्री को 5 लीटर वाले प्लास्टिक ड्रम में डालकर ड्रम को पूरा पानी से भर दें।
- नियमित रूप से (सुबह–सायं) लकड़ी के डण्डे से ड्रम में तरल को मिलायें तथा बोरे या जाली से ढ़ककर रखें।
- उपयुक्त तापमान (30–35 डि.से) होने पर तरल खाद एवं कीटनाशी 20 से 25 दिन में तैयार हो जाती है।
- तैयार खाद एवं कीटनाशी के 5 मि.लीटर को 1 लीटर पानी में घोल कर फसलों पर छिड़काव करें।

- तैयार घोल को 15 से 20 दिन से ज्यादा भण्डारण न करें।

जैविक खेती के दो अमृत "जीवामृत एवं बीजामृत"

Navratan Agro Organic Pvt. Ltd.
C-26, IIIrd Floor, Palam Vyapar Kendra,
Palam Vihar, Gurgaon, HARYANA 122017
Ph: 0124-4200950, 91- 8447573880;
Email navratanagroorganic@gmail.com
Website: navratanagroorganic.com